October 2005

6 thu

Topic - पुरुषत्व एवं स्त्रीत्व का सामाजिक निर्माण (Social Construction of Masculinity & feminity)

सामान्य अर्थ में समाज का निर्माण मनुष्यों से होता है जिनके मध्य स्थापित सम्बन्धों के संगठित रूप को ही समाज कहा जाता है।

राइट के अनुसार - "समाज का अर्थ केवल व्यक्तियों का समूह ही नहीं है, अपितु समूह में रहने वाले व्यक्तियों के जो पारस्परिक सम्बन्ध हैं, उन सम्बन्धों के संगठित रूप को समाज

7 fri

कहते हैं।"

मैकाइवर तथा पेज के अनुसार :- "समाज सामाजिक संबंधों का जाल है जो सदैव बदलता रहता है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर समाज के लिये आवश्यक तत्व निम्नलिखित है :-

(i) व्यक्तियों का समूह

(ii) परस्पर संबंध

(iii) अन्त: क्रिया

8 sat 9 sun

(iv) संगठित स्वरूप

सामान्यत: समाज की सत्ता जिस प्रकार की होती है वहां उसी लिंग को अधिक महत्व दिया जाता है। सभ्य समाज में पितृसत्तात्मक परिवारों को ही उचित माना जाता है। देश के संविधान ने भारत में पितृसत्ता को स्वीकार कर लिया और उसी के आधार पर हमारी सामाजिक संरचना का विकास हुआ है। पितृसत्तात्मक समाजों में पुरुष का महत्व इतना अधिक बढ़ गया है कि महिलाओं की जीवन उनकी अस्मिता सभी संकट में आ गये हैं।

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

November 2005

Notes

पुरुषत्व तथा सामाजिक निर्माण :-

सामाजिक संरचना के निर्माण में पुरुषत्व की विशेष भूमिका मानी

P.T.O

Scanned with CamScanner

10 mon जाती है। पुरुषत्व को शक्ति से सम्पन्न माना जाता है। उसमें गतिशीलता अधिक मानी जाती है। पुत्र को पिता का प्रतिबिम्ब माना जाता है। समाज में पुत्र का विशेष महत्व माना जाता है क्योंकि उन्हें परिवार का वारिस माना जाता है। पुत्र प्राप्ति के लिये पुरुष के लिए सदियों से दूसरा विवाह करना भी उचित माना जाता है।

वर्तमान समय में चाहे कितने ही परिवर्तन आ जायें परिवार की आर्थिक शक्ति के रूप में पुरुष को ही देखा जाता है।

11 tue

नारीत्व तथा सामाजिक निर्माण :-

नारी होना स्वयं में गौरव की बात है, क्योंकि नारियां करुणा, मातृत्व, दया, प्रेम तथा सहयोग की प्रतिमूर्ति समझी जाती है। सामाजिक व्यवस्था में महिलाओं का परम्परागत रूप से स्थान साधारण रहा है। उनकी पहचान भोजन पकाना, बच्चों का लालन-पालन करना, घर के सुव्यवस्थित रखना के रूप में होती

12 wed है। महिला को आर्थिक शक्ति कभी भी नहीं माना गया। महिलाओं को हमेशा दोयम दर्जे के रूप में रखा गया है। महिलाओं को परिवार की सम्पत्ति, वैवाहिक सम्बन्ध निश्चित करने आदि के महत्वपूर्ण निर्णयों में शामिल नहीं किया जाता है। आवश्यकता पड़ने पर महिलायें में धनोपार्जन करती हैं, फिर भी उन्हें आर्थिक रूप से कभी महत्व नहीं दिया जाता है।

नारी पुरुष की भाँति विविध कार्य-क्षेत्रों में उन्नति कर सकती है, यदि उन्हें पुरुष की भाँति पर्याप्त अवसर मिले। उन्हें बेहतर शिक्षा प्रदान की जानी चाहिये।

—x—

September 2005 Notes

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	

Scanned with CamScanner

(20)

October 2005

Sub - C-6 Gender, School & Society

13 thu

Topic - Role of Femminity in Social Construction
(सामाजिक निर्माण में महिला की भूमिका)

समाज के विकास तथा तरक्की में महिलायें महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उनके बिना विकसित समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती। महिलाये परिवार बनाती है, परिवार घर बनाता है, घर समाज बनाता है और समाज ही देश बनाता है।

सामाजिक निर्माण में महिलाओं की भूमिका:-

14 fri

(i) सामाजिक-शैक्षिक- धार्मिक योगदान :-

सभ्यता, संस्कृति, संस्कार तथा परम्परा महिलाओं के कारण ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तान्तरित होती है। अतः महिलाओं के सामाजिक-शैक्षिक-धार्मिक कार्य व्यक्ति, परिवार, समाज तथा राष्ट्र को सशक्त बनाते हैं। कहा भी गया है कि :- सशक्त महिला, सशक्त समाज की आधार शिला है। बच्चे की प्रथम शिक्षक माता है जो बच्चे की सर्वांगीण विकास की उत्तरदायी है।

15 sat

(ii) स्वतंत्रता आन्दोलन में योगदान :

स्वतंत्रता आंदोलन में अनेक महिलाओं ने अपना अमूल्य योगदान देते हुये अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। सरोजनी नायडु, लक्ष्मी सहगल, अरुणा आसफ अली आदि महिलाओं ने राष्ट्र-निर्माण तथा विकास में अतुलनीय योगदान दिया है।

(iii) वैज्ञानिक योगदान :- आत्मविश्वास, लगन, मेहनत तथा बुद्धि-कौशल के कारण महिलाओं के लिये वैज्ञानिक खोजों तथा अनुसंधान का क्षेत्र अछूता नहीं है। टेसी थॉमस को भारत की मिसाइल वुमेन कहा जाता है।

November 2005						
Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

Notes

P.T.O

Scanned with CamScanner

17 mon

(iv) प्रशासनिक क्षेत्र में योगदान :-

यदि प्रशासनिक दक्षता तथा कुशलता सुदृढ़ है तो राष्ट्र की प्रगति और विकास सुनिश्चित है। वर्तमान में अनेक महिलायें भारतीय प्रशासनिक सेवा तथा राज्य प्रशासनिक सेवाओं में अपनी उपस्थिति सुनिश्चित कर राष्ट्र-निर्माण तथा विकास में अपना अतुलनीय योगदान दे रही हैं किरण बेदी, कन्ना प्रेयसी, राजबाला वर्मा आदि-आदि।

(v) साहित्यिक योगदान :-

18 tue

साहित्य समाज का दर्पण होता है। साहित्य के माध्यम से राष्ट्र-निर्माण तथा विकास उच्चतम स्तर पर किया जा सकता है। अनेक महिलाओं ने साहित्य-सृजन के द्वारा राष्ट्र निर्माण में अपना विशेष योगदान दिया है- जैसे महादेवी वर्मा, मीरा, आशापूर्णा देवी, सुभद्रा कुमारी चौहान आदि।

(vi) राजनीतिक योगदान :-

सरोजनी नायडु, इंदिरा गाँधी आदि अनेक महिलाओं ने अपनी राजनीतिक प्रतिभा का प्रयोग राष्ट्र-निर्माण तथा विकास में किया गया है। यह एक महत्वपूर्ण और सार्थक कदम है।

19 wed

(vii) संस्कृति, संस्कार तथा परम्पराओं की संरक्षिका के रूप में :-

सम्पूर्ण विश्व में भारत को विश्वगुरु का दर्जा दिलाने में महिलाओं की ही भूमिका रही है। यही कारण है कि भारत को संस्कृति तथा परम्पराओं का देश कहा जाता है।

अतः हम कह सकते हैं कि महिलाओं ने अपने कर्तव्य, कर्मठता और सृजनशीलता के माध्यम से राष्ट्र-निर्माण और विकास में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया है। आज भी नारी पुरुषों के समान ही सुशिक्षित, सक्षम और सफल है।

September 2005

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	

Notes

Scanned with CamScanner

(21) Sub:- C-6 Gender School & Society

October 2005

20 thu

Topic :- Working Towards gender equality in the Classroom (कक्षाकक्ष में लिंग समानता के कार्य)

प्राचीन काल में स्त्री का स्तर और उसे उपलब्ध शैक्षिक अवसर पुरुषों के समान थे। मध्यकालीन भारत में लिंग-भेद व्याप्त हो गया। संविधान की दृष्टि से यदि देखा जाए तो महिलाओं तथा पुरुषों में कोई लिंगभेद नहीं है। परन्तु वास्तविकता इससे बहुत भिन्न है। आज महिलाओं की संख्या में निरन्तर गिरावट आ रही है। 21 fri महिलाओं को दोयम दर्जे का माना जाता है। समाज में पुरुष प्रधानता व्याप्त है। जेण्डर असमानता प्रत्येक क्षेत्र में देखी जा सकती है।

कक्षा में जेण्डर समानता के लिए किये जाने वाले प्रयास :-

(i) बालिकाओं के कक्षाओं में नामांकन बढ़ाने तथा उन्हे कक्षा में रोके रखने पर विशेष बल दिया जा रहा है।

(ii) अध्यापिकाओं की नियुक्ति में 50% महिलायें होंगी।

22 sat

(iii) बालकों तथा बालिकाओं 23 sun की पाठ्यवस्तु में किसी प्रकार का अन्तर न हो।

(iv) बालिकाओं को विद्यालय (IX से XII) में रोके रखने हेतु छात्रावास सुविधाओं को सुदृढ़ बनाने की एक योजना प्रारंभ की गई है। इसमें रह रहे छात्राओं के भोजन, फर्नीचर, मनोरंजन संबंधी सामग्री आदि के लिए सहायता प्रदान की जाती है।

(v) प्रयास किये जा रहे हैं कि प्रत्येक नवोदय विद्यालय के एक-तिहाई बालिकायें अवश्य हो।

November 2005

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

Notes

(vi) +2 स्तर पर विद्यालय छोड़ देनेवाली बालिकाओं की आवश्यकताओं को

Scanned with CamScanner

October 2005

24 mon पूरा करने के लिए व्यावसायिक कार्यक्रम तैयार किये जा रहे हैं।

(vii) सम्पूर्ण साक्षरता अभियानों में महिलाओं को सामर्थ्यवान बनाने पर विशेष बल दिया जा रहा है। सम्पूर्ण साक्षरता अभियानों में महिलाओं का नामांकन सामान्यतः हर स्थान पर 60% से अधिक है।

(viii) उच्च शिक्षा के सामान्य तथा तकनीकी दोनों क्षेत्रों में महिलाओं के लिए शैक्षिक अवसरों में असाधारण वृद्धि हुई है। उच्च शिक्षा के कुल नामांकन में महिलाओं का नामांकन में पिछले दशकों की अपेक्षा ज्यादा वृद्धि हुई है।

25 tue (ix) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग विश्वविद्यालयों को लैंगिक समानता, बालिका शिक्षा, महिलाओं के स्वावलम्बन आदि के क्षेत्र में शोध प्रारम्भ करने, पाठ्यचर्या के रूप में अध्ययन कार्यक्रमों को बढ़ावा देने हेतु सहायता देता नजर आ रहे है।

(x) तकनीकी तथा व्यावसायिक धारा में भी महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि हुई है।

26 wed स्वतंत्रता के बाद लिंगभेद के प्रति हमारे दृष्टिकोण में परिवर्तन आया है। स्त्रियों को पुरुष के समान स्तर पर लाने के लिये आवश्यक सामाजिक, आर्थिक और कानूनी परिवर्तन किये गये और नये युग का सूत्रपात हुआ। कानून ने स्त्री और पुरुष दोनों के लिये नियुक्ति और व्यवसाय के समान अवसर उपलब्ध कराये है। व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में महिलाओं की सहभागिता बढ़ाने के लिये सरकार को यह शिक्षा निःशुल्क कर देनी चाहिये।

September 2005

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	

Notes

Scanned with CamScanner

(22) Sub.- C-6 Gender School & Society

November 2005

24 thu Topic:- Gender Role in Society Through Caste
(जाति द्वारा समाज में लिंग भूमिकाएँ)

हमारे समाज में जाति की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है। प्राचीनकाल में जाति न होकर वर्ण व्यवस्था (कर्म के आधार) का प्रचलन था जिसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र के आधार पर वर्ण थे। वर्ण-व्यवस्था का आधार कर्म था न कि जन्म। पर अब जाति का आधार जन्म होता है।

25 fri जाति की परिभाषा:-

सी-एच. कूले:- "जब कोई वर्ग पूर्णतः वंशानुगत हो जाता है तो उसे जाति कहते है।"

ई.ए. ग्रेट:- "जाति को एक अन्तर्विवाह वाला समूह अथवा ऐसे समूहों के संकलन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसका नाम तथा समान परम्परागत व्यवसाय होता है जो एक ही स्रोत से उत्पन्न होने का दावा करते हैं और सजातीय समूहों का निर्माण करने वाले समझे जाते हैं।"

26 sat 27 sun

संक्षेप में जाति वंशानुक्रम पर आधारित एक विशेष सामाजिक समूह है जिसका सदस्य व्यक्ति जन्म से हो जाता है और यह अपरिवर्तनीय और वंश-परम्परा से चली आती है।

लिंग असमानता की दृष्टि से जाति की महत्वपूर्ण भूमिका होती है क्योंकि हमारे सामाजिक ताने-बाने में जातियों का प्रभाव अत्यधिक है। यदि जातियाँ चाह लें तो वे चुनौतीपूर्ण लिंग की समानता की शिक्षा को एक नवीन आयाम प्रदान कर सकती है।

December 2005

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

Notes

लैंगिक असमानता तथा भेदभाव के सन्दर्भ में जाति की भूमिका का आकलन निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर किया

Scanned with CamScanner

28 mon जा सकता है :-

(i) जातियों में वार्ता तथा सहयोग की स्थापना कर लैंगिक भेदभावों को समाप्त करने का प्रयास करना चाहिये।

(ii) प्रत्येक व्यक्ति को जाति को एक सामाजिक व्यवस्था के रूप में देखना चाहिए न कि ऊँच-नीच के रूप में एवं स्त्रियों के प्रति विशेष ध्यान तथा संरक्षण का भाव रखना चाहिये।

(iii) जातिगत आरक्षणों का लाभ महिलाओं तक पहुँचाया जाय जिससे उनकी स्थिति में सुधार आ सके।

29 tue (iv) लैंगिक भेदभाव को समाप्त करने हेतु प्रत्येक जाति को चाहिये कि स्त्रियों में आत्मविश्वास पैदा करें और उन्हें प्रत्येक क्षेत्र में आगे आने के लिये अभिप्रेरित करें।

(v) विद्यालयों की स्थापना कर विभिन्न जातियों को शिक्षा तथा विशेषकर महिलाओं की शिक्षा के प्रसार का प्रयास करना चाहिये।

(vi) बालिकाओं तथा महिलाओं का आदर करना, केवल अपनी जाति की नहीं अपितु समस्त जातियों की।

(vii) महिलाओं को व्यापार तथा रोजगार और श्रम में सहभागी बनाकर उनको पुरुषों के समकक्ष लाना।

30 wed (viii) कन्या भ्रूण हत्या, बाल-विवाह, दहेज आदि महिलाओं से जुड़ी कुरीतियों, जिसके उनके सम्मान को आघात पहुँचता हो, का व्यापक स्तर पर विरोध करना।

(ix) बालिकाओं तथा महिलाओं को सुरक्षात्मक वातावरण प्रदान करना।

(x) महिलाओं को पुरुषों की भांति ही संवैधानिक अधिकार प्राप्त है, अतः उनके प्रति किसी भी प्रकार का भेदभाव करना असंवैधानिक है, इस बात को प्रसारित करना।

October 2005

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

Notes

Scanned with CamScanner

(23)

December 2005

Sub. - G-6 Gender School & Society

1 thu

Topic - Gender Role in Society through Religion

(धर्म द्वारा समाज में लिंग भूमिका)

भारत एक धर्म निरपेक्ष देश है। भारतीय जनमानस पर धर्म का प्रभाव प्राचीनकाल से ही अत्यधिक रहा है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में दैनिक महत्व के कार्यों पर्यावरण रक्षा, जीव-जन्तुओं की रक्षा आदि के कार्यों को भी धर्म से जोड़ा गया, जिससे हमारी प्रकृति संरक्षित होती रही है।

2 fri

कोई भी धर्म सबसे पहले मानवता और प्रेम सिखाता है। धर्म के नाम पर तमाम अंधविश्वास, रूढ़ियाँ तथा मनुष्यों का खून बहाया जा रहा है। परन्तु धर्म अपने मूल रूप में आ जाये तो यह पापियों का नाशक होता है।

धर्म की परिभाषा :-

हेराल्ड डोकलिंग :- "धर्म के सारे मूल्यों के धारण करने में विश्वास को कहते हैं।"

काण्ट :- "धर्म से अभिप्राय है दैवीय अनुदेशों के रूप में अपने कर्तव्यों का निर्वाह करना।"

3 sat

4 sun

गिस्बर्ट (Gisbert) :- "धर्म ईश्वर तथा देवताओं के प्रति जिनके ऊपर मनुष्य अपने को निर्भर अनुभव करता है, गतिशील विश्वास और आत्म-समर्पण है।"

अतः धर्म जीवन के उन्नत मूल्य है। मानवता की सेवा, समाज की सेवा, प्राणियों के प्रति प्रेम का भाव रखना धर्म है। प्रत्येक धर्म में लिंग के आधार पर भूमिकाएं निर्धारित होती है। धर्म चाहे कोई भी हो, सभी धर्मों में महिला लिंग को दोयम दर्जे का स्तर प्राप्त है।

धर्म की चुनौतीपूर्ण लिंग की समानता हेतु शिक्षा में भूमिका इस प्रकार है :-

January 2006

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

Notes

(i) धार्मिक गतिशीलता द्वारा
(ii) स्त्रियों की सहभागिता तथा आदर द्वारा
(iii) चारित्रिक तथा नैतिक विकास द्वारा

P.T.O

Scanned with CamScanner

(iv) कर्म के सिद्धान्त की प्रतिष्ठा
(v) विद्यालय की स्थापना
(vi) जागरूकता का प्रसार
(vii) सामाजिक कुरीतियों तथा भेदभावों को गैर-धार्मिक घोषित करना।

धार्मिक गतिशीलता द्वारा :- धार्मिक गतिशीलता से तात्पर्य है धर्म निहित कुरुप्रथों, आडम्बर और अवरोधक तत्वों को समाप्त करके उनके स्थान पर धर्म को व्यक्ति के जीवन और गतिशीलता का अंग बना लेना। गतिशीलता के द्वारा धर्म स्त्री हो या पुरुष, दोनों को ही समान महत्व प्रदान करते हैं।

स्त्रियों की सहभागिता तथा आदर द्वारा :- धार्मिक कार्यों में जिन धर्म में स्त्रियों को समान रूप से सहभागी बनाया जाता है, उन्हें आदर प्रदान किया जाता है तो ऐसे धर्म के माननेवालों में भी स्त्रियों की समानता और उनके प्रति आदर का भाव जाग्रत होता है।

चारित्रिक तथा नैतिक विकास द्वारा :- धर्म अपने अनुयायियों के चारित्रिक तथा नैतिक उत्थान का कार्य करता है जिससे स्त्रियों के प्रति आदर, सम्मान और

समाज में उनके प्रति कुव्यवहार नहीं होता है।

कर्म के सिद्धान्त की प्रतिष्ठा :- 'कर्म ही पूजा है' अर्थात अपने कर्तव्यों को करनेवाला व्यक्ति ही सच्चा धार्मिक है और जो व्यक्ति अपने कर्तव्य तथा कर्म की अवहेलना करता है वह धार्मिक कदापि नहीं हो सकता है।

विद्यालय की स्थापना :- धार्मिक संस्थाओं द्वारा कन्याओं तथा गरीब बच्चों हेतु विद्यालयों की स्थापना करने से उनकी समानता हेतु शिक्षा के कार्य में वृद्धि हो रही है।

जागरूकता का प्रसार :- जागरूकता के प्रसार से (बाल-विवाह, ~~बालिका~~ विद्यालयीकरण, नशापान के विरुद्ध) चुनौतीपूर्ण लिंग की समानता के लिए शिक्षा में वृद्धि होती है।

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

November 2005

Scanned with CamScanner

Subject - PSS-10 Pedagogy of Science

Topic- Objectives of Teaching Science (ii)

(विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य)

हमारा जीवन की सफलता बहुत कुछ उद्देश्यों पर निर्भर है। सफलता समस्त क्षेत्रों में होनी चाहिये। शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य मानव जीवन का सर्वांगीण विकास माना गया है। शिक्षा के अन्तर्गत विभिन्न विषय है। इन विषयों में प्रत्येक विषय को पढ़ाने के पृथक पृथक उद्देश्य है।

16 fri

जीव विज्ञान शिक्षण में जीवित वस्तुओं का अध्ययन होता है। जीव विज्ञान का उद्देश्य प्राणियों तथा पेड़-पौधों के जीवन का अध्ययन करके उनके द्वारा मानव का कल्याण करना है।

जीव-विज्ञान शिक्षण के प्रमुख उद्देश्य निम्न है:-

(i) ज्ञानात्मक उद्देश्य (Knowledge objectives)
(ii) समझ सम्बन्धी उद्देश्य (Understanding objectives)
(iii) कुशलता (skill) सम्बन्धी उद्देश्य
(iv) योग्यता (Abilities) सम्बन्धी उद्देश्य
(v) रुचि (Interest) सम्बन्धी उद्देश्य

17 sat 18 sun

(vi) वैज्ञानिक दृष्टिकोण (Scientific Attitude)
(vii) व्यवसाय प्रदान करना (Provide Business)
(viii) जीवन-स्तर का उन्नयन (Uplift of Living Standard)

ज्ञानात्मक उद्देश्य:- जीव-विज्ञान शिक्षण का यह प्रमुख उद्देश्य है। इसके अन्तर्गत ज्ञान जैसे - पद, Concepts, सिद्धान्त, सूत्र, परिभाषा आदि का ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

समझ सम्बन्धी:- छात्रों में जीव-विज्ञान के विभिन्न तथ्यों, पदों, प्रक्रियाओं और सिद्धान्तों को समझने की क्षमता का विकास करना।

कुशलता सम्बन्धी उद्देश्य:- आधुनिक समय में

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

January 2006

Notes

P.T.O

Scanned with CamScanner

19 mon

विज्ञान शिक्षण का मुख्य उद्देश्य छात्रों में विभिन्न कुशलताओं का विकास करना है, जिससे दैनिक जीवन की अनेक समस्याओं का निराकरण कर जीवन-स्तर को उन्नत बनाया जा सके। छात्रों में चार्ट, चित्र, ग्राफ बनाने की कुशलता का विकास होता है।

योग्यता सम्बन्धी उद्देश्य :- विभिन्न जन्तुओं तथा वनस्पतियों की पहचान और उनका वर्गीकरण की योग्यता, अपनी Home garden लगाये रखने की योग्यता आदि।

रुचि सम्बन्धी :- बालक के विषय में रुचि लेने पर सफलता जल्द मिलती है। अतः विषय की

20 tue

रुचि जागृत करने के लिये अध्यापक को अच्छा विज्ञान साहित्य एवं उपयुक्त विज्ञान सामग्री का प्रयोग करना चाहिये। पत्रिकाओं को पढ़ने की आदत का विकास, पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त अन्य पुस्तकें पढ़ना, विज्ञान क्लब तथा विज्ञान मेला में भाग लेना आदि।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण :- वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने से वे स्वयं वैज्ञानिक सामग्री का संकलन करेंगे, अपने निर्णयों पर पुनः विचार करने को तैयार रहेंगे तथा अन्धविश्वासों से दूर रहेंगे।

21 wed

व्यवसाय प्रदान करना :- इनमें विद्यार्थी अपनी रुचि के अनुसार किसी एक व्यावसायिक पाठ्यक्रम से सम्बन्धित विषय का चयन करता है और अपने आपको उसके लिये तैयार करता है। जैसे - चिकित्सा, इंजीनियरिंग, कृषि आदि विज्ञान बालकों में इन व्यवसायों के प्रति प्रेरणा पैदा करता है।

जीवन-स्तर का उन्नयन :- विज्ञान बालकों को नये वातावरण, आविष्कार, स्वस्थ रहने के लिये नये तरीके आदि सभी बातों से परिचित कराता है।

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26

Notes

Scanned with CamScanner